शिक्षा की नई चुनौतियाँ

हर एक इंसान के जीवन में एक अहम किरदार निभानेवाला एक वस्तु है शिक्षा। शिक्षा के बिना एक मनुष्य का जीवन और एक पशु के जीवन का अंतर हम नहीं समझ सकते है। परंतु आज की इस दुनिया में शिक्षा या शिक्षा ग्रहण करनेवाले छात्र कई प्रकार की नई चुनौतियों का सामना करना शुरू हो गई है। क्या है शिक्षा की नई चुनौतियाँ? कैसे इसे रोका जाये? कौन है इसके पिछे?

प्राचीन काल से हम देखा जाये तो शिक्षा हर किसी को प्राप्त होनेवाली हक नहीं था। यदि हम महाभारत नामक इतिहास देखें तो महाभारत के वीर सूर्यपुत्र कर्ण को अपने जात-पात के कारण गुरु द्रोण ने शिक्षा देने से मना करदिया था। परंतु आज की इस दुनिया को हम देखें तो हर कोई विद्या प्राप्त करने का अधिकार है। लेकिन सबसे पहले उसमें आनेवाली कई समस्या है।

उसमें सबसे पहले आते है बढ़ती हुई पाठ भाग या उससे होनेवाली दबाव।

आज की दुनिया के पढ़ाई में बच्चों को कई प्रकार के विषय का ग्रहण पढ़ाई को और बोझ बना देता है। इस कारण छात्र ठीक से सांस लेना भी भूल जाता है। इतना ही नहीं वह इसके कारण दबाव में आकर विषाद और अपने जाकर खुदखुशी करता है। हाल में हमारे केरल में दसवें कक्षा में पढ़नेवाली लड़की की मृत्यु इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। यह दबाववाली पढ़ाई के कारण बच्चे अपने जीवन सबसे खूबसूरत पल का आनंद नहीं ले पाते हैं और जिंदगी आगे नहीं बढ़ते।

दूसरा सबसे बड़ा चुनौतियाँ है अध्यापक से मिलनेवाली मार या गालियाँ जिसके कारण विद्यार्थी को पढ़ाई में कोई दिल नही लगता। हमारे भारत को देख जाये तो मारकर पढ़ाई करवाने पर दुनिया को चौथी पैदान में आता ~~था~~ है। इतना ही बच्चों को ऊपर करनेवाले अत्याचार के कारण बच्चे पढ़ाई न करके जीवन को अंधकार में ध्रम जाता है। देश के कई इलाकों पर देखा जाये तो अध्यापक के हाथ का डंडा उनके ज़बान से ज्यादा बोलता है। आमीर खान और राजकुमार

हिरानी का "तीन इडियट्स" इसका एक उदाहरण है जिसमें अध्यापक के कारण खुदखुशी करनेवाले युवक का चित्रण किया है।

अगला इसका कारण है घर-परिवार की नीची हालत के कारण पढाई बीच में छोडनेवाली या रोकनेवाली कई युवक है। जिसके कारण उनको खेती, पशु-पक्षियों को देखना आदि चीजो में उलझा जाता है। इसकी वजह से हमारे देश में बेरोजगारी भी बढता है। "विश्व विद्यालय आँकडा" के अनुसार भारत ही दुनिया में बेरोजगारी के

के हालत अध्ययन करते है।
अगला इसका कारण
है माता-पिता से बढनेवाली
नई आशा जिसके कारण
वह बच्चों को उनकी मरज़ी
से जीने को अधिकार
न देते और उनके अनुसार
शिक्षा की पूर्व परीक्षा के
अंक मे निर्भर है। उनके
अनुसार जो बच्चे इंजीनीयर
या डॉक्टर नही बनेगा
उनका सम्मान समाज से
उड़ जायेगा। इसलिए हर
कोई अपने बच्चे को देश
के बड़े विद्यालय में लाने
केलिए प्रयास करता है।
'फूपी' में रोहन नामक का
एक लडका माँ-बाँप के

दबाव के कारण अपने चहेते साहित्यकारों को छोड़कर इंजीनियर पढ़ना शुरू किया और बाद में दबाव के कारण दवाईयाँ एम बी एम स जैसे चीजों का शिकार हो गया।

आज की दुनिया में शिक्षा को हासिल करने के खिलाफ आनेवाले एक नया भूत है "मोबाइल फोन" मोबाइल फोन की प्रचार के साथ दुनिया में बच्चों का इसके उपयोग में बढ़ना शुरू हो गया है और जिससे बच्चों का मन पढ़ाई से हट गया है। बच्चे दिन-रात इसका उपयोग करके पढ़ाई के

समय को बरबाद कर रहा है। मोबइल फोन का प्रचार हमारे देश में कोरोना का समय हुआ था। तब से हम विश्व आरोग्य संघटना का हिसाब देखे तो लगभग पैंतीस प्रतीशत बच्चो पर मोबइल उपयोग के कारण उनके पढाई में कमी आई है। इसके साथ-साथ उनका सेहत भी इसके वजह से बिगड़ रहा है। पढाई न करके इंस्टाग्राम में "रिल्स" बनाना तो अब एक मामूली बात बन चुकी है। जो बच्चे कोविड के पहले अवल अंक में आते थे वह अब पढाई करना

खोज किया है। इसके साथ बच्चों के रचनात्मकता में खलल हो चुकी है।

अगला एक दुश्मन है शिक्षा के लिए वह है नशा। नशा के अधिक उपयोग से युवक या बच्चा हर किसी को शिक्षा में आगे नही जा पा रहे है। "विश्वविद्यालय ऑफ टोरन्टो" के अनुसार धूम्रपान के अधिक उपयोग से एक बच्चे की दिमाग की नस में बाधा आ सकता है जिसके कारण वह अपने शिक्षा के प्रति संतरक नही रहते है। अधिक नशीली चीजे के उपयोग

के कारण बच्चों की मानसिक हालत बिगड़ने की आसार अधिक है। बच्चे ठीक से पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते और जिसके कारण तन और मन ठीक नहीं होता है पढ़ाई के लिए और ज़िंदगी में उसके साथियों से पिछे रह जाते है।

माता-पिता की चिंता, प्रेम के कत्ल में फँसना, कई प्रकार की अत्र की ऊपर के कार्य को देखना, या कई अनेक कारण जो शिक्षा की चुनौतियाँ में असर रहा हो और जिसके कारण पढ़ाई से ध्यान हटना जैसी चीजें।

बच्चो की शिक्षा की चुनौतियाँ को दूर करने में सरकार अहम रोल बन सकता है। सरकार के द्वारा करनेवाली कई प्रकार की क्या कमी हमारे बच्चो के शिक्षा को अच्छा ले आ सकता है।

सरकार को सबसे पहले बच्चो को बढ़ती हुई पाठ भार को कम करवाना होगा जिससे उन्हे केवल उपयोग होनेवाली चीजो का ग्रहण करे ताकि एक बच्चा "किताब के कीड़ा" न बनकर समझ में आनेवाली कई प्रकार की चुनौतियों को पीछे छोड़ दे।

अपना कदम अध्यापक को लेना विद्यार्थीयों को गाली न देकर उनके साथ मनुष्यता का भाव अपनाना होगा ताकि बच्चों को अध्यापक ईश्वर जैसा प्रकट हो। बच्चों को पढने के लिए सरकार द्वारा कम पैसे में उधार देना चाहिए ताकि कोई बच्चा बिना पैसे कारण पढाई बीच में रोक दे।

माता - पिता को उनके ~~अपने~~ सपने के साथ - साथ बच्चों का भी सपने को ख्याल रखना होगा ताकि वह जीवन में उड सके। मोबाइल फोन को उपयोग में पाबंधी लगावाकर कम करवाना

होगा। माता-पिता इसका ठीक से ध्यान रखना होगा ताकि वह पढ़ाई में आगे आये और रचनात्मक कर्म करें। सरकार को नाशवाली चीजों के ऊपर पाबंदी लगवानी होगी ताकि एक स्वच्छ समाज उभर कर आगे आये। माता-पित के रोबश आदि चीजों के साथ "प्रेम का झ्मल" भी पढ़ाई के लिए समझाना होगा।

शिक्षा ही जीवन को आगे लाने का मार्ग है। एक देश का विकास इस पर निर्भर है। हमें एक अच्छे देश और अच्छी दुनिया चाहिए

जिसके लिए अच्छा विद्यार्थी और छात्र होना अहम है। हमारे राष्ट्रपिता गांधीजी ने कहा है "जिस देश में विद्या नही, उसे किसी चीजा का कदर नही। बीरबल के अनुसार शिक्षा जिस देश में अच्छा उस देश को आगे जाने से कोई नही रोक सकता।

शिक्षा को आगे रखकर सारी चुनौतियाँ दूर करके हमे एक नया देश का निर्माण करना होगा। सारी चुनौतियों दूर करना ही हमारा धर्म है।

—